Coverage on the Report Release

Landscape Study on Women Entrepreneurship by EdelGive Foundation

महिला उद्यमशीलता पर रिपोर्ट जारी

रांची/वरीय संवाददाता।

भारत की अग्रणी परोपकारी संस्था एडेलगिव फाउंडेशन ने शुक्रवार को महिला उद्यमशीलता के परिदृश्य को लेकर अपनी रिपोर्ट जारी की। यह एक समग्रतापूर्ण और राष्ट्रव्यापी अध्ययन है जिसमें महिला उद्यमियों के द्वारा सामना की जाने वाली चुनौतियों, स्वास्थ्य पर प्रभाव, सामाजिक-आर्थिक सुरक्षा और परिवार की देखरेख के नतीजे जैसे अहम मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया गया है। झारखंड सहित 13 राज्यों में किए गए अध्ययन से पता चला है कि अर्द्ध-शहरी और ग्रामीण भारत की लगभग 80% महिलाएं उद्यम शुरू करने के बाद अपनी सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक स्थिति में महत्वपूर्ण सुधार महसूस करती हैं। सर्वेक्षण में शामिल महिलाओं ने कहा कि इससे उनके भीतर स्वतंत्रता और आत्मविश्वास की भावना का संचार हुआ।

यह अध्ययन एडेलगिव फाउंडेशन के उदयम स्त्री अभियान का हिस्सा है, जिसका उद्देश्य महिलाओं में उद्यमशीलता की भावना को बढ़ावा देना और भारत में महिला आर्थिक सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए प्रमुख मार्गों में से एक के रूप में महिला उद्यमशीलता को प्रोत्साहित करना है। एक ऑनलाइन कार्यक्रम के दौरान इस रिपोर्ट को महिला और बाल विकास मंत्रालय के सचिव राम मोहन मिश्रा ने जारी किया, जिसकी अध्यक्षता नीति आयोग के सीईओ अमिताभ कांत ने की।

महिला उद्यमशीलता को बढ़ावा देने के लिए मौजूद कई सरकारी योजनाओं और नीतियों की मौजूदगी के बावजूद महिला उद्यमियों के द्वारा इन योजनाओं का लाभ लेने के मामले में संख्या काफी कम है। सर्वे में शामिल महिला उद्यमियों में से केवल 1% ने सरकारी योजनाओं का लाभ लिया और ऐसा इसलिए क्योंकि मात्र 11% महिलाओं को ऐसी योजनाओं के बारे में जानकारी थी। अध्ययन के मुताबिक भारत में महिलाओं के मालिकाना हक वाले कारोबारों के पांच वर्षों में 90% तक बढ़ने का अनुमान है, जबकि अमेरिका और ब्रिटेन में यह क्रमशः 50% और 24% फीसदी है।

एडेलगिव फाउंडेशन की एक्जिक्यूटिव चेयरपर्सन विद्या शाह ने कहा कि, "भारत में महिलाएं सांस्कृतिक क्रांति की अगुवाई कर रही हैं। वह अपने कारोबारों का निर्माण कर रही हैं और भविष्य के लिए उद्यमी महिलाओं के लिए रास्ता तैयार कर रही हैं। अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाने, रोजगार सृजन और औद्योगीकरण में उनकी भूमिका अहम है।"

एडेलगिव फाउंडेशन की सीईओ नगमा मुल्ला ने कहा कि, उदयम स्त्री सामाजिक उन्नति और उनकी भलाई के मामले में अहम साबित हो सकता है। अध्ययन में इस बात की सिफारिश की गई है कि राज्य अपनी विशिष्ट आवश्यकताओं की पहचान करने और प्रासंगिक कार्यक्रमों को लागू करने, कर छूट के साथ एक ब्रांड के तहत महिला उद्यमियों के उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए अध्ययन कराएं। इसके साथ ही अकाउंटिंग, एचआर प्रबंधन और कम्युनिकेशन, नैतिक समर्थन के लिए पीढ़ी को जागरूक करना और सामुदायिकता को बढ़ावा देने और नवोदित उद्यमियों को अपने उद्यम को औपचारिक रूप देने और विस्तार करने में सक्षम बनाने के लिए लिए स्थानीय स्तर पर मेंटरशिप कार्यक्रम चलाए जाने का जिक्र किया गया है।

Businesses owned by women entrepreneurs in India likely to grow up to 90% in the next 5 years

Ranchi : Prominent philanthropic organization, EdelGive Foundation on Friday released its Landscape Study on Women Entrepreneurship. It is a comprehensive, national study that focuses on the challenges, impact on health, socio-economic security and family wellbeing outcomes of women entrepreneurs, providing a complete overview of women entrepreneurs and the ecosystem within which they thrive.

The study conducted across 13 states has revealed that around 80% of women, from semi urban and rural India, feel a significant improvement in their socio-economic and cultural status after starting an enterprise. Women surveyed also reported a greater sense of independence and confidence. The study is a part of EdelGive's UdyamStree Campaignwhich aims to boost the entrepreneurial spirit in women and plot women entrepreneurship as one of the key pathways to boosting Women's Economic Empowerment in India.

It was released by Mr. Ram Mohan Mishra, Secretary, Ministry of Women and Child Development in an online event which was chaired by Mr. Amitabh Kant, CEO, NITI Aayog.

EdelGive Foundation
An Edelweiss Initiative

देश में महिला उद्यमियों का कारोबार बढ़ने का अनुमान

नयी दिल्ली| देश में महिला उद्यमियों की लीडरशिप में चलाए जा रहे व्यवसायों में अगले पांच साल के दौरान 90% तक बढ़ोतरी हो सकती है। परमार्थ कार्य करने वाले संगठन एडेलगिव फांउडेशन ने 13 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में किए गए अध्ययन के आधार पर तैयार की गई रिपोर्ट में ऐसा कहा है।

एडेलगिव फाउंडेशन की रिपोर्ट जारी

तेजी से बढ़ रहे महिला स्वामित्व वाले उद्यम

देशप्राण संवाददाता

रांची, 16 अप्रैल : भारत की अग्रणी परोपकारी संस्था एडेलगिव फाउंडेशन ने शुक्रवार को महिला उद्यमशीलता के परिदृश्य को लेकर अपनी रिपोर्ट जारी की। यह एक समग्रतापूर्ण और राष्ट्रव्यापी अध्ययन है, जिसमें महिला उद्यमियों के द्वारा सामना की जाने वाली चुनौतियों, स्वास्थ्य पर प्रभाव, सामाजिक-आर्थिक सुरक्षा और परिवार की देखरेख के नतीजे जैसे अहम मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया गया है। 13 राज्यों में किये गये अध्ययन से पता चला है कि अर्द्ध-शहरी और ग्रामीण भारत की लगभग 80 प्रतिशत महिलाएं उद्यम शुरू करने के बाद अपनी सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक स्थिति में महत्वपूर्ण सुधार महसूस करती हैं। सर्वेक्षण में शामिल महिलाओं ने कहा कि इससे उनके भीतर स्वतंत्रता और आत्मविश्वास की भावना का संचार हुआ।

यह अध्ययन एडेलगिव फाउंडेशन के उदयम स्त्री अभियान का हिस्सा है, जिसका उद्देश्य महिलाओं में उद्यमशीलता की भावना को बढ़ावा देना और भारत में महिला आर्थिक सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए प्रमुख मार्गों में से एक के रूप में महिला उद्यमशीलता को प्रोत्साहित करना है। एक ऑनलाइन कार्यक्रम के दौरान इस रिपोर्ट को महिला और बाल विकास मंत्रालय के सचिव राम मोहन मिश्रा ने जारी किया, जिसकी अध्यक्षता नीति आयोग के सीईओ अमिताभ कांत ने की।

11 फीसदी महिलाओं को योजना की जानकारी

महिला उद्यमशीलता को बढ़ावा देने के लिए मौजूद कई सरकारी योजनाओं और नीतियों की मौजूदगी के बावजूद महिला उद्यमियों के द्वारा योजनाओं का लाभ लेने के मामले में संख्या काफी कम है। सर्वे में शामिल महिला उद्यमियों में से केवल 1 प्रतिशत ने सरकारी योजनाओं का लाभ लिया, क्योंकि मात्र 11 प्रतिशत महिलाओं को ऐसी योजनाओं के बारे में जानकारी थी। अध्ययन के मुताबिक भारत में महिलाओं के मालिकाना हक वाले कारोबारों के पांच वर्षों में 90 प्रतिशत तक बढ़ने का अनुमान है, जबकि अमेरिका और ब्रिटेन में यह क्रमशः 50 प्रतिशत और 24 प्रतिशत फीसदी है।

ભારતમાં મહિલાની માલિકીના વેપારો 90 ટકા સુધી વધશે

ભાસ્કર ન્યૂઝ | મુંબઈ

ધર્માદા સંસ્થા એડલગિવ ફાઉન્ડેશન દ્વારા શુક્રવારે મહિલા વેપાર સાહસિકતા પરનું તેનું લેન્ડસ્કેપ અધ્યયન જારી કરવામાં આવ્યું હતું. આ વ્યાપક, રાષ્ટ્રીય અધ્યયન મહિલા વેપાર સાહસિકોના પડકારો, આરોગ્ય પર પ્રભાવ, સામાજિક-આર્થિક સલામતી અને પરિવારના કલ્યાણનાં પરિણામો પર કેન્દ્રિત હોઈ મહિલા વેપાર સાહસિકો અને તેઓ પ્રેરિત કરે તે ઈકોસિસ્ટમનો સંપૂર્ણ નજરિયો પૂરો પાડે છે.13 રાજ્યમાં હાથ ધરવામાં આવેલા આ અધ્યયનમાં એવું તારણ નીકળ્યું છે કે અર્ધશહેરી અને ગ્રામીણ ભારતની આશરે 80 ટકા મહિલાઓને ઉદ્યોગ શરૂ કર્યા પછી તેમની સામાજિક-આર્થિક અને સાંસ્કૃતિક સ્થિતિમાં નોંધપાત્ર સુધારણા થઈ હોવાનું મહેસૂસ થાય છે. સર્વેક્ષણ કરવામાં આવેલી મહિલાઓએ સ્વતંત્રતા અને આત્મવિશ્વાસનું ઉત્તમ ઉદાહરણ પૂરું પાડ્યું છે. આ ઓનલાઈન કાર્યક્રમના ભાગરૂપે મહિલા અને બાળ વિકાસ મંત્રાલયના સચિવ રામ મોહન મિશ્રા દ્વારા વિમોચન કરાયું હતું.

EdelGive Foundation
An Edelweiss Initiative

हमारा महानगर MUMBAI - 19 Apr 202

एडेलगिव महिलाओं को बनाएगा आत्मनिर्भर

मुंबई। भारत की अग्रणी परोपकारी संस्था एडेलगिव फाउंडेशन ने महिला उद्यमशीलता के परिदृश्य को लेकर अपनी रिपोर्ट जारी की। यह एक समग्रतापूर्ण और राष्ट्रव्यापी अध्ययन है जिसमें महिला उद्यमियों के द्वारा सामना की जाने वाली चुनौतियों, स्वास्थ्य पर प्रभाव, सामाजिक-आर्थिक सुरक्षा और परिवार की देखरेख के नतीजे जैसे अहम मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया गया है। यह रिपोर्ट महिला उद्यमियों और उस व्यवस्था के बारे में समग्र नजरिया प्रदान करती है, जिसमें उनका विकास होता है। 13 राज्यों में किए गए अध्ययन से पता चला है कि अर्द्ध-शहरी और ग्रामीण भारत की लगभग 80% महिलाएं उद्यम शुरू करने के बाद अपनी सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक स्थिति में महत्वपूर्ण सुधार महसूस करती हैं। सर्वेक्षण में शामिल महिलाओं ने कहा कि इससे उनके भीतर स्वतंत्रता और आत्मविश्वास की भावना का संचार हुआ। यह अध्ययन एडेलगिव फाउंडेशन के उदयमस्त्री अभियान का हिस्सा है, जिसका उद्देश्य महिलाओं में उद्यमशीलता की भावना को बढ़ावा देना और भारत में महिला आर्थिक सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए प्रमुख मार्गों में से एक के रूप में महिला उद्यमशीलता को प्रोत्साहित करना है।

महिला के स्वामित्व वाले उद्यमों के पांच वर्षों में 90 फीसदी तक बढ़ने का अनुमान - एडेलगिव फाउंडेशन

रांची/कार्यालय संवाददाता।

भारत की अग्रणी परोपकारी संस्था एडेलगिव फाउंडेशन ने शुक्रवार को महिला उद्यमशीलता के परिदृश्य को लेकर अपनी रिपोर्ट जारी की। यह एक समग्रतापूर्ण और राष्ट्रव्यापी अध्ययन है जिसमें महिला उद्यमियों के द्वारा सामना की जाने वाली चुनौतियों, स्वास्थ्य पर प्रभाव, सामाजिक-आर्थिक सुरक्षा और परिवार की देखरेख के नतीजे जैसे अहम मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया गया है। झारखंड सहित 13 राज्यों में किए गए अध्ययन से पता चला है कि अर्द्ध-शहरी और ग्रामीण भारत की लगभग 80% महिलाएं उद्यम शुरू करने के बाद अपनी सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक स्थिति में महत्वपूर्ण सुधार महसूस करती हैं। सर्वेक्षण में शामिल महिलाओं ने कहा कि इससे उनके भीतर स्वतंत्रता और आत्मविश्वास की भावना का संचार हुआ।

यह अध्ययन एडेलगिव फाउंडेशन के उदयम स्त्री अभियान का हिस्सा है, जिसका उद्देश्य महिलाओं में उद्यमशीलता की भावना को बढ़ावा देना और भारत में महिला आर्थिक सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए प्रमुख मार्गों में से एक के रूप में महिला उद्यमशीलता को प्रोत्साहित करना है। एक ऑनलाइन कार्यक्रम के दौरान इस रिपोर्ट को महिला और बाल विकास मंत्रालय के सचिव राम मोहन मिश्रा ने जारी किया, जिसकी अध्यक्षता नीति आयोग के सीईओ अमिताभ कांत ने की।

महिला उद्यमशीलता को बढ़ावा देने के लिए मौजूद कई सरकारी योजनाओं और नीतियों की मौजूदगी के बावजूद महिला उद्यमियों के द्वारा इन योजनाओं का लाभ लेने के मामले में संख्या काफी कम है। सर्वे में शामिल महिला उद्यमियों में से केवल 1% ने सरकारी योजनाओं का लाभ लिया और ऐसा इसलिए क्योंकि मात्र 11% महिलाओं को ऐसी योजनाओं के बारे में जानकारी थी। अध्ययन के मुताबिक भारत में महिलाओं के मालिकाना हक वाले कारोबारों के पांच वर्षों में 90% तक बढ़ने का अनुमान है, जबकि अमेरिका और ब्रिटेन में यह क्रमशः 50% और 24% फीसदी है।

एडेलगिव फाउंडेशन की एक्जिक्यूटिव चेयरपर्सन विद्या शाह ने कहा कि, "भारत में महिलाएं सांस्कृतिक क्रांति की अगुवाई कर रही हैं। वह अपने कारोबारों का निर्माण कर रही हैं और भविष्य के लिए उद्यमी महिलाओं के लिए रास्ता तैयार कर रही हैं। अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाने, रोजगार सृजन और औद्योगीकरण में उनकी भूमिका अहम है।"

एडेलगिव फाउंडेशन की सीईओ नगमा मुल्ला ने कहा कि, उदयम स्त्री सामाजिक उन्नति और उनकी भलाई के मामले में अहम साबित हो सकता है।

अध्ययन में इस बात की सिफारिश की गई है कि राज्य अपनी विशिष्ट आवश्यकताओं की पहचान करने और प्रासंगिक कार्यक्रमों को लागू करने, कर छूट के साथ एक ब्रांड के तहत महिला उद्यमियों के उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए अध्ययन कराएं। इसके साथ ही अकाउंटिंग, एचआर प्रबंधन और कम्युनिकेशन, नैतिक समर्थन के लिए पीढ़ी को जागरूक करना और सामुदायिकता को बढ़ावा देने और नवोदित उद्यमियों को अपने उद्यम को औपचारिक रूप देने और विस्तार करने में सक्षम बनाने के लिए लिए स्थानीय स्तर पर मेंटरशिप कार्यक्रम चलाए जाने का जिक्र किया गया है।

एडेलगिव फाउंडेशन ने जारी की रिपोर्ट

महिला के स्वामित्व वाले उद्यमों के पांच वर्षों में 90 फीसदी तक बढ़ने का अनुमान

रांची । संवाददाता

भारत की अग्रणी परोपकारी संस्था एडेलगिव फाउंडेशन ने शुक्रवार को महिला उद्यमशीलता के परिदृश्य को लेकर अपनी रिपोर्ट जारी की। यह एक समग्रतापूर्ण और राष्ट्रव्यापी अध्ययन है जिसमें महिला उद्यमियों के द्वारा सामना की जाने वाली चुनौतियों, स्वास्थ्य पर प्रभाव, सामाजिक-आर्थिक सुरक्षा और परिवार की देखरेख के नतीजे जैसे अहम मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया गया है। झारखंड सहित 13 राज्यों में किए गए अध्ययन से पता चला है कि अर्द्ध-शहरी और ग्रामीण भारत की लगभग 80% महिलाएं उद्यम शुरू करने के बाद अपनी सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक स्थिति में महत्वपूर्ण सुधार महसूस करती हैं। सर्वेक्षण में शामिल महिलाओं ने कहा कि इससे उनके भीतर स्वतंत्रता और आत्मविश्वास की भावना का संचार हुआ।

यह अध्ययन एडेलगिव फाउंडेशन के उद्यम स्त्री अभियान का हिस्सा है, जिसका उद्देश्य महिलाओं में उद्यमशीलता की भावना को बढ़ावा देना और भारत में महिला आर्थिक सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए प्रमुख मार्गों में से एक के रूप में महिला उद्यमशीलता को प्रोत्साहित करना है। एक ऑनलाइन कार्यक्रम के दौरान इस रिपोर्ट को महिला और बाल विकास मंत्रालय के सचिव राम मोहन मिश्रा ने जारी किया, जिसकी अध्यक्षता नीति आयोग के सीईओ अमिताभ कांत ने की।

महिला उद्यमशीलता को बढ़ावा देने के लिए मौजूद कई सरकारी योजनाओं और नीतियों की मौजूदगी के बावजूद महिला उद्यमियों के द्वारा इन योजनाओं का लाभ लेने के मामले में संख्या काफी कम है। सर्वे में शामिल महिला उद्यमियों में से केवल 1% ने सरकारी योजनाओं का लाभ लिया और ऐसा इसलिए क्योंकि मात्र 11% महिलाओं को ऐसी योजनाओं के बारे में जानकारी थी। अध्ययन के मुताबिक भारत में महिलाओं के मालिकाना हक वाले कारोबारों के पांच वर्षों में 90% तक बढ़ने का अनुमान है, जबकि अमेरिका और ब्रिटेन में यह क्रमशः 50% और 24% फीसदी है।

एडेलगिव फाउंडेशन की एक्जिक्यूटिव चेयरपर्सन विद्या शाह ने कहा कि, 'भारत में महिलाएं सांस्कृतिक क्रांति की अगुवाई कर रही हैं। वह अपने कारोबारों का निर्माण कर रही हैं और भविष्य के लिए उद्यमी महिलाओं के लिए रास्ता तैयार कर रही हैं। अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाने, रोजगार सृजन और औद्योगीकरण में उनकी भूमिका अहम है।'

एडेलगिव फाउंडेशन की सीईओ नगमा मूल्ला ने कहा कि, उद्यम स्त्री सामाजिक उन्नति और उनकी भलाई के मामले में अहम साबित हो सकता है।

अध्ययन में इस बात की सिफारिश की गई है कि राज्य अपनी विशिष्ट आवश्यकताओं की पहचान करने और प्रासंगिक कार्यक्रमों को लागू करने, कर छूट के साथ एक फ्रांड के तहत महिला उद्यमियों के उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए अध्ययन कराएं। इसके साथ ही अकाउंटिंग, एचआर प्रबंधन और कम्युनिकेशन, नैतिक समर्थन के लिए पीढ़ी को जागरूक करना और सामुदायिकता को बढ़ावा देने और नवोदित उद्यमियों को अपने उद्यम को औपचारिक रूप देने और विस्तार करने में सक्षम बनाने के लिए स्थानीय स्तर पर मेंटरशिप कार्यक्रम चलाए जाने का जिक्र किया गया है।

महिला के स्वामित्व वाले उद्यमों के 90 फीसदी तक बढ़ने का अनुमान

एडेलगिव फाउंडेशनभारत की अग्रणी परोपकारी संस्था एडेलगिव फाउंडेशन ने महिला उद्यमशीलता के परिदृश्य को लेकर अपनी रिपोर्ट जारी की। यह एकसमग्रतापूर्ण और राष्ट्रव्यापी अध्ययन है जिसमें महिला उद्यमियों केद्वारा सामना की जाने वाली चुनौतियों, स्वास्थ्य पर प्रभाव,सामाजिक-आर्थिक सुरक्षा और परिवार की देखरेख के नतीजे जैसे अहम मुद्दोंपर ध्यान केंद्रित किया गया है। झारखंड सहित 13 राज्यों में किए गएअध्ययन से पता चला है कि अर्द्ध-शहरी और ग्रामीण भारत की लगभग 80%महिलाएं उद्यम शुरू करने के बाद अपनी सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिकस्थिति में महत्वपूर्ण सुधार महसूस करती हैं। भारत मेंमहिला आर्थिक सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए प्रमुख मार्गों में से एकके रूप में महिला उद्यमशीलता को प्रोत्साहित करना है। एक ऑनलाइनकार्यक्रम के दौरान इस रिपोर्ट को महिला और

को ऐसी योजनाओं के बारे में जानकारी थी।अध्ययन के मुताबिक भारत में महिलाओं के मालिकाना हक वाले कारोबारों केपांच वर्षों में 90% तक बढ़ने का अनुमान है, जबकि अमेरिका और ब्रिटेन में

यह क्रमशः 50% और 24% फीसदी है। एडेलगिव फाउंडेशन की एक्जिक्यूटिव चेयरपर्सन विद्या शाह ने कहा कि, भारत में महिलाएं सांस्कृतिक क्रांति की अगुवाई कर रही हैं। वह अपनेकारोबारों का निर्माण कर रही हैं और भविष्य के लिए उद्यमी महिलाओं के लिए रास्ता तैयार कर रही हैं। अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाने, रोजगार सृजन औरऔद्योगीकरण में उनकी भूमिका अहम है। एडेलगिव फाउंडेशन की सीईओ नगमा मुल्ला ने कहा कि, उदयम स्त्री सामाजिकउन्नति और उनकी भलाई के मामले में अहम साबित हो सकता है।अध्ययन में इस बात की सिफारिश की गई है कि राज्य अपनी विशिष्ट आवश्यकताओंकी

सांस्कृतिक क्रांति की अगुवाई कर रही भारत में महिलाएं : विद्या शाह

रांची/वरिष्ठ संवाददाता ।

भारत की अग्रणी परोपकारी संस्था एडेलगिव फाउंडेशन ने शुक्रवार को महिला उद्यमशीलता के परिदृश्य को लेकर अपनी रिपोर्ट जारी की। यह एक समग्रतापूर्ण और राष्ट्रव्यापी अध्ययन है जिसमें महिला उद्यमियों के द्वारा सामना की जाने वाली चुनौतियों, स्वास्थ्य पर प्रभाव, सामाजिक-आर्थिक सुरक्षा और परिवार की देखरेख के नतीजे जैसे अहम मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया गया है। झारखंड सहित 13 राज्यों में किए गए अध्ययन से पता चला है कि अर्द्ध-शहरी और ग्रामीण भारत की लगभग 80% महिलाएं उद्यम शुरू करने के बाद अपनी सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक स्थिति में महत्वपूर्ण सुधार महसूस करती हैं। सर्वेक्षण में शामिल महिलाओं ने कहा कि इससे उनके भीतर स्वतंत्रता और आत्मविश्वास की भावना का संचार हुआ।

यह अध्ययन एडेलगिव फाउंडेशन के उदयम स्त्री अभियान का हिस्सा है, जिसका उद्देश्य महिलाओं में उद्यमशीलता की भावना को बढ़ावा देना और भारत में महिला आर्थिक सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए प्रमुख मार्गों में से एक के रूप में महिला उद्यमशीलता को प्रोत्साहित करना है। एक ऑनलाइन कार्यक्रम के दौरान इस रिपोर्ट को महिला और बाल विकास मंत्रालय के सचिव राम मोहन मिश्रा ने जारी किया, जिसकी अध्यक्षता नीति आयोग के सीईओ अमिताभ कांत ने की।

महिला उद्यमशीलता को बढ़ावा देने के लिए मौजूद कई सरकारी योजनाओं और नीतियों की मौजूदगी के बावजूद महिला उद्यमियों के द्वारा इन योजनाओं का लाभ लेने के मामले में संख्या काफी कम है। सर्वे में शामिल महिला उद्यमियों में से केवल 1% ने सरकारी योजनाओं का लाभ लिया और ऐसा इसलिए क्योंकि मात्र 11% महिलाओं को ऐसी योजनाओं के बारे में जानकारी थी। अध्ययन के मुताबिक भारत में महिलाओं के मालिकाना हक वाले कारोबारों के पांच वर्षों में 90% तक बढ़ने का अनुमान है, जबकि अमेरिका और ब्रिटेन में यह क्रमशः 50% और 24% फीसदी है।

एडेलगिव फाउंडेशन की एक्जिक्यूटिव चेयरपर्सन विद्या शाह ने कहा कि, "भारत में महिलाएं सांस्कृतिक क्रांति की अगुवाई कर रही हैं। वह अपने कारोबारों का निर्माण कर रही हैं और भविष्य के लिए उद्यमी महिलाओं के लिए रास्ता तैयार कर रही हैं। अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाने, रोजगार सृजन और औद्योगीकरण में उनकी भूमिका अहम है।"

एडेलगिव फाउंडेशन की सीईओ नगमा मुल्ला ने कहा कि, उदयम स्त्री सामाजिक उन्नति और उनकी भलाई के मामले में अहम साबित हो सकता है।

अध्ययन में इस बात की सिफारिश की गई है कि राज्य अपनी विशिष्ट आवश्यकताओं की पहचान करने और प्रासंगिक कार्यक्रमों को लागू करने, कर छूट के साथ एक ब्रांड के तहत महिला उद्यमियों के उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए अध्ययन कराएं। इसके साथ ही अकाउंटिंग, एचआर प्रबंधन और कम्युनिकेशन, नैतिक समर्थन के लिए पीढ़ी को जागरूक करना और सामुदायिकता को बढ़ावा देने और नवोदित उद्यमियों को अपने उद्यम को औपचारिक रूप देने और विस्तार करने में सक्षम बनाने के लिए लिए स्थानीय स्तर पर मेंटरशिप कार्यक्रम चलाए जाने का जिक्र किया गया है।

अगले पांच साल में भारतीय महिला उद्यमी अपने कारोबार को नई बुलंदी पर ले जाएंगी

■ बिजनेस डेस्क, मुंबई:

भारत में महिला उद्यमी कार्पोरेट सेक्टर में अपनी पहचान वना रही हैं। एक रिपोर्ट में कहा गया है कि अगले पांच साल के दौरान महिला उद्यमी अपने कारोवार में 90 प्रतिशत तक की ग्रोथ हासिल करने में सफल हो सकती हैं। इस अध्ययन में इस वात पर भी गौर किया गया है कि महिला उद्यमियों को समर्थन देने वाली सरकारी योजनाओं का लाभ उठाए जाने की दर फिलहाल काफी कम है।

13 राज्यों से 3300 महिलाओं की पहचान

एडेलगिव फांउडेशन ने 13 राज्यों और संघ शासित प्रदेशों में महिला उद्यमियों को

लेकर अपनी रिसर्च रिपोर्ट तैयार की है। इस रिपोर्ट के लिए देश भर की 3,300 महिला उद्यमियों की जानकारियों को एकत्रित किया गया है। इन महिला उद्यमियों को तीन अलग अलग श्रेणियों में वांटा गया। महिला उद्यमियों को विनिर्माण, खुदरा कारोवार और सेवा आपूर्ति उद्यमी की श्रेणी में वांटा गया है। उसके वाद इनमें से 1,235 महिला उद्यमियों को अध्ययन के लिए चुना गया और उनसे वातचीत की गई। इन महिला उद्यमियों के साथ ही उनके परिवार के सदस्यों, कर्मचारियों और ग्राहकों से भी वातचीत की गई। साथ ही महिला उद्यमियों को प्रत्यक्ष समर्थन देने वाले 20 गैर- सरकारी संगठनों के साथ भी विस्तृत वातचीत की गई है।

ग्रामीण महिलाओं के रुतबे में बदलाव

अध्ययन में कहा गया है कि ग्रामीण और छोटे शहरों से आने वाले महिलाओं को कारोवार शुरू करने के वाद उनके सामाजिक- आर्थिक और सांस्कृतिक रूतवे में उल्लेखनीय सुधार दिखाई दिया है।

EdelGive Foundation
An Edelweiss Initiative

पुण्यनगरी

पुढील ५ वर्षांत महिला उद्योजक संचालित व्यवसायांमध्ये ९० टक्क्यांनी होणार वाढ

एडेलगिव्ह फाऊंडेशनच्या अहवालाचा निष्कर्ष

मुंबई : पुढील ५ वर्षांमध्ये भारतातील महिला उद्योजक संचालित व्यवसायांमध्ये जवळपास ९० टक्क्यांनी वाढ होण्याची अपेक्षा आहे. तुलनेत याच कालावधीमध्ये हेच विकासाचे प्रमाण यूएस व यूकेमध्ये अनुक्रमे ५० टक्के व २४ टक्के असण्याची अपेक्षा आहे, असा निष्कर्ष एडेलगिव्ह फाऊंडेशनच्या अहवालात काढण्यात आला आहे.

एडेलगिव्ह फाऊंडेशनने त्यांचा 'लँडस्केप स्टडी ऑन वुमेन आंत्रेप्रीन्युअरशीप' अहवाल सादर केला. १३ राज्यांमध्ये करण्यात आलेल्या या संशोधनामधून निदर्शनास आले आहे की अर्धशहरी व ग्रामीण भारतातील जवळपास ८० टक्के महिलांनी उद्योजक म्हणून सुरुवात केल्यानंतर त्यांच्या सामाजिक-आर्थिक व सांस्कृतिक दर्जामध्ये लक्षणीय सुधारणा झाली आहे. सर्वेक्षण करण्यात आलेल्या महिला उद्योजकांपैकी फक्त १ टक्के महिलांनी सरकारी योजनेचा लाभ घेतला आहे आणि यामागील प्रमुख कारण म्हणजे फक्त जवळपास ११ टक्के महिलांना कोणत्याही योजनांबाबत माहिती आहे.

आर्थिक सहाय्यबाबत जागरुकतेचा अभाव, आवश्यक कागदपत्रे उपलब्ध नसणे, या योजनांचा वापर करण्याची प्रक्रिया 'जटिल' असण्याचा समज आणि गहाण ठेवण्यासाठी कोणतीही मालमत्ता नसणे ही यामागील काही कारणे होती. याबाबत एडेलगिव्ह फाऊंडेशनच्या मुख्य कार्यकारी अधिकारी नम्मा मुल्ला म्हणाल्या, महिलांना आर्थिकदृष्ट्या सक्षम करणे हे पूर्णतः विकासावर अवलंबून आहे. महिलांमध्ये स्वावलंबीपणा व आत्मविश्वास निर्माण करण्यापासून महिला जगत असलेल्या जीवनाचा दर्जा वाढवण्यापर्यंत उद्योजकता त्यांच्या सक्षमीकरणाला चालना देते. तसेच उद्योजकता त्यांना स्वतःसाठी, तसेच त्यांच्या मुलांसाठी दर्जेदार शिक्षण व उत्तम आरोग्यासंदर्भात योग्य निर्णय घेण्यामध्ये स्वायत्तता व निर्णय घेण्याचा अधिकार देते. आमचा विश्वास आहे की, उद्यम स्त्री उपक्रम सामाजिक प्रगती व कल्याणासाठी उत्प्रेरक ठरू शकतो.

महिलाओं में स्वतंत्रता और आत्मविश्वास की भावना का संचार हुआ - एडेलगिव फाउंडेशन

रांची/संवाददाता।

भारत की अग्रणी परोपकारी संस्था एडेलगिव फाउंडेशन ने शुक्रवार को महिला उद्यमशीलता के परिदृश्य को लेकर अपनी रिपोर्ट जारी की। यह एक समग्रतापूर्ण और राष्ट्रव्यापी अध्ययन है जिसमें महिला उद्यमियों के द्वारा सामना की जाने वाली चुनौतियों, स्वास्थ्य पर प्रभाव, सामाजिक-आर्थिक सुरक्षा और परिवार की देखरेख के नतीजे जैसे अहम मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया गया है। झारखंड सहित 13 राज्यों में किए गए अध्ययन से पता चला है कि अर्द्ध-शहरी और ग्रामीण भारत की लगभग 80% महिलाएं उद्यम शुरू करने के बाद अपनी सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक स्थिति में महत्वपूर्ण सुधार महसूस करती हैं। सर्वेक्षण में शामिल महिलाओं ने कहा कि इससे उनके भीतर स्वतंत्रता और आत्मविश्वास की भावना का संचार हुआ।

यह अध्ययन एडेलगिव फाउंडेशन के उदयम स्त्री अभियान का हिस्सा है, जिसका उद्देश्य महिलाओं में उद्यमशीलता की भावना को बढ़ावा देना और भारत में महिला आर्थिक सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए प्रमुख मार्गों में से एक के रूप में महिला उद्यमशीलता को प्रोत्साहित करना है। एक ऑनलाइन कार्यक्रम के दौरान इस रिपोर्ट को महिला और बाल विकास मंत्रालय के सचिव राम मोहन मिश्रा ने जारी किया, जिसकी अध्यक्षता नीति आयोग के सीईओ अमिताभ कांत ने की।

महिला उद्यमशीलता को बढ़ावा देने के लिए मौजूद कई सरकारी योजनाओं और नीतियों की मौजूदगी के बावजूद महिला उद्यमियों के द्वारा इन योजनाओं का लाभ लेने के मामले में संख्या काफी कम है। सर्वे में शामिल महिला उद्यमियों में से केवल 1% ने सरकारी योजनाओं का लाभ लिया और ऐसा इसलिए क्योंकि मात्र 11% महिलाओं को ऐसी योजनाओं के बारे में जानकारी थी। अध्ययन के मुताबिक भारत में महिलाओं के मालिकाना हक वाले कारोबारों के पांच वर्षों में 90% तक बढ़ने का अनुमान है, जबकि अमेरिका और ब्रिटेन में यह क्रमशः 50% और 24% फीसदी है। एडेलगिव फाउंडेशन की एक्जिक्यूटिव चेयरपर्सन विद्या शाह ने कहा कि, "भारत में महिलाएं सांस्कृतिक क्रांति की अगुवाई कर रही हैं। वह अपने कारोबारों का निर्माण कर रही हैं और भविष्य के लिए उद्यमी महिलाओं के लिए रास्ता तैयार कर रही हैं। अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाने, रोजगार सृजन और औद्योगीकरण में उनकी भूमिका अहम है।"

एडेलगिव फाउंडेशन की सीईओ नगमा मुल्ला ने कहा कि, उदयम स्त्री सामाजिक उन्नति और उनकी भलाई के मामले में अहम साबित हो सकता है।

अध्ययन में इस बात की सिफारिश की गई है कि राज्य अपनी विशिष्ट आवश्यकताओं की पहचान करने और प्रासंगिक कार्यक्रमों को लागू करने, कर छूट के साथ एक ब्रांड के तहत महिला उद्यमियों के उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए अध्ययन कराएं। इसके साथ ही अकाउंटिंग, एचआर प्रबंधन और कम्युनिकेशन, नैतिक समर्थन के लिए पीढ़ी को जागरूक करना और सामुदायिकता को बढ़ावा देने और नवोदित उद्यमियों को अपने उद्यम को औपचारिक रूप देने और विस्तार करने में सक्षम बनाने के लिए लिए स्थानीय स्तर पर मेंटरशिप कार्यक्रम चलाए जाने का जिक्र किया गया है।

EdelGive Foundation
An Edelweiss Initiative

उदयम स्त्री सामाजिक उन्नति में अहम साबित हो सकता है : एडेलगिव फाउंडेशन

रांची/संवाददाता ।

भारत की अग्रणी परोपकारी संस्था एडेलगिव फाउंडेशन ने शुक्रवार को महिला उद्यमशीलता के परिदृश्य को लेकर अपनी रिपोर्ट जारी की। यह एक समग्रतापूर्ण और राष्ट्रव्यापी अध्ययन है जिसमें महिला उद्यमियों के द्वारा सामना की जाने वाली चुनौतियों, स्वास्थ्य पर प्रभाव, सामाजिक-आर्थिक सुरक्षा और परिवार की देखरेख के नतीजे जैसे अहम मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया गया है। झारखंड सहित 13 राज्यों में किए गए अध्ययन से पता चला है कि अर्द्ध-शहरी और ग्रामीण भारत की लगभग 80% महिलाएं उद्यम शुरू करने के बाद अपनी सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक स्थिति में महत्वपूर्ण सुधार महसूस करती हैं। सर्वेक्षण में शामिल महिलाओं ने कहा कि इससे उनके भीतर स्वतंत्रता और आत्मविश्वास की भावना का संचार हुआ। यह अध्ययन एडेलगिव फाउंडेशन के उदयम स्त्री अभियान का हिस्सा है, जिसका उद्देश्य महिलाओं में उद्यमशीलता की भावना को बढ़ावा देना और भारत में महिला आर्थिक सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए प्रमुख मार्गों में से एक के रूप में महिला उद्यमशीलता को प्रोत्साहित करना है। एक ऑनलाइन कार्यक्रम के दौरान इस रिपोर्ट को महिला और बाल विकास मंत्रालय के सचिव राम मोहन मिश्रा ने जारी किया, जिसकी अध्यक्षता नीति आयोग के सीईओ अमिताभ कांत ने की। महिला उद्यमशीलता को बढ़ावा देने के लिए मौजूद कई सरकारी योजनाओं और नीतियों की मौजूदगी के बावजूद महिला उद्यमियों के द्वारा इन योजनाओं का लाभ लेने के मामले में संख्या काफी कम है। सर्वे में शामिल महिला उद्यमियों में से केवल 1% ने सरकारी योजनाओं का लाभ लिया और ऐसा इसलिए क्योंकि मात्र 11% महिलाओं को ऐसी योजनाओं के बारे में जानकारी थी। अध्ययन के मुताबिक भारत में महिलाओं के मालिकाना हक वाले कारोबारों के पांच वर्षों में 90% तक बढ़ने का अनुमान है, जबकि अमेरिका और ब्रिटेन में यह क्रमशः 50% और 24% फीसदी है।

एडेलगिव फाउंडेशन की एक्जिक्यूटिव चेयरपर्सन विद्या शाह ने कहा कि, "भारत में महिलाएं सांस्कृतिक क्रांति की अगुवाई कर रही हैं। वह अपने कारोबारों का निर्माण कर रही हैं और भविष्य के लिए उद्यमी महिलाओं के लिए रास्ता तैयार कर रही हैं। अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाने, रोजगार सृजन और औद्योगीकरण में उनकी भूमिका अहम है।" एडेलगिव फाउंडेशन की सीईओ नगमा मुल्ला ने कहा कि, उदयम स्त्री सामाजिक उन्नति और उनकी भलाई के मामले में अहम साबित हो सकता है। अध्ययन में इस बात की सिफारिश की गई है कि राज्य अपनी विशिष्ट आवश्यकताओं की पहचान करने और प्रासंगिक कार्यक्रमों को लागू करने, कर छूट के साथ एक ब्रांड के तहत महिला उद्यमियों के उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए अध्ययन कराएं। इसके साथ ही अकाउंटिंग, एचआर प्रबंधन और कम्युनिकेशन, नैतिक समर्थन के लिए पीढ़ी को जागरूक करना और सामुदायिकता को बढ़ावा देने और नवोदित उद्यमियों को अपने उद्यम को औपचारिक रूप देने और विस्तार करने में सक्षम बनाने के लिए लिए स्थानीय स्तर पर मेंटरशिप कार्यक्रम चलाए जाने का जिक्र किया गया है।

४ शिवनेर मुंबई, शनिवार १७ एप्रिल २०२१

एडेलगिव्ह फाऊंडेशनने नुकतेच सादर केलेल्या अहवालाच्या मते, पुढील ५ वर्षांमध्ये भारतातील महिला उद्योजक संचालित व्यवसायांमध्ये जवळपास ९० टक्क्यांनी वाढ होण्याची अपेक्षा

एडलगिव्ह फाऊंडेशन स्टडीच्या मते उद्योजक बनल्यानंतर महिलांच्या कौटुंबिक व सामाजिक स्थितीमध्ये सुधारणा होण्यासोबत आत्मविश्वास व स्वावलंबीपणामध्ये वाढ

मुंबई, शुक्रवार : प्रतिष्ठित परोपकारी संस्था एडेलगिव्ह फाऊंडेशनने शुक्रवारी त्यांचा 'लँडस्केप स्टडी ऑन वुमेन आंत्रेप्रीन्युअरशीप' अहवाल सादर केला. हे व्यापक राष्ट्रीय संशोधन महिला उद्योजकांची आव्हाने, त्यांच्या आरोग्य, सामाजिक-आर्थिक सुरक्षितता व कौटुंबिक कल्याण निष्पत्तीवरील परिणामावर लक्ष केंद्रित करते आणि महिला उद्योजक व त्या कार्यरत असलेल्या इकोयंत्रणेचे परिपूर्ण अवलोकन देते. १३ राज्यांमध्ये करण्यात आलेल्या या संशोधनामधून निदर्शनास आले आहे की अर्ध-शहरी व ग्रामीण भारतातील जवळपास ८० टक्के महिलांनी उद्योजक म्हणून सुरुवात केल्यानंतर त्यांच्या सामाजिक-आर्थिक व सांस्कृतिक दर्जामध्ये लक्षणीय सुधारणा झाली आहे. सर्वेक्षण करण्यात आलेल्या महिलांनी स्वावलंबीपणा व आत्मविश्वासाचा देखील उल्लेख केला. हे संशोधन फाऊंडेशनच्या उद्यमस्त्री कॅम्पेनचा भाग आहे. या कॅम्पेनचा महिलांमधील उद्योजकता उत्साहाला चालना देण्याचा आणि भारतातील महिलांच्या आर्थिक सक्षमीकरणाला चालना देण्यासाठी प्रमुख मार्ग म्हणून महिला उद्योजकला प्राधान्य देण्याचा मनसुबा आहे. महिला व बाल विकास मंत्रालयाचे सचिव श्री. राम मोहन मिश्रा यांच्या हस्ते ऑनलाइन कार्यक्रमाच्या माध्यमातून हा अहवाल सादर करण्यात आला. निती आयोगाचे मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री. अमिताभ कांत यांनी या कार्यक्रमाचे अध्यक्षस्थान भूषवले.

बहुआयामी संशोधनाने महिला उद्योजकांच्या प्रवासाबाबत जाणून घेण्यासाठी सामाजिक, आर्थिक, वैयक्तिक ते कौटुंबिक अशा विविध घटकांवर लक्ष केंद्रित केले आहे आणि इकोयंत्रणेमधील सरकार, एनजीओ व कॉर्पोरेट्सच्या भूमिकांकडे देखील पाहिले आहे. संशोधनामधून असे निदर्शनास येते की उद्योजकतेमुळे महिलांसाठी सामाजिक-सांस्कृतिक पैलूंमध्ये सुधारणा झालेली दिसण्यात आली असली तरीही महिला उद्योजकांसाठी उपलब्ध आर्थिक माहिती व संसाधनांमध्ये लक्षणीय पोकळी आहे आणि त्यांना विपणन, उत्पादन, तंत्रज्ञान व सामाजिक-सांस्कृतिक आव्हानांचा सामना करावा लागत आहे. महिला उद्योजकतेला पाठिंबा देण्याचा अनेक सरकारी योजना व धोरणे असली तरी महिला उद्योजकांकडून अशा योजनांचा अवलंब होण्याचे प्रमाण खूपच कमी आहे. सर्वेक्षण करण्यात आलेल्या महिला उद्योजकांपैकी फक्त १ टक्के महिलांनी सरकारी योजनेचा लाभ घेतला आहे आणि यामागील प्रमुख कारण म्हणजे फक्त जवळपास ११ टक्के महिलांना कोणत्याही योजनांबाबत माहिती आहे. आर्थिक सहाय्यबाबत जागरूकतेचा अभाव, आवश्यक कागदपत्रे उपलब्ध नसणे, या योजनांचा वापर करण्याची प्रक्रिया 'जटिल' असण्याचा समज आणि गहाण ठेवण्यासाठी कोणतीही मालमत्ता नसणे ही यामागील काही कारणे होती. संशोधनाचा अंदाज आहे की पुढील ५ वर्षांमध्ये भारतातील महिला उद्योजक संचालित व्यवसायांमध्ये जवळपास ९० टक्क्यांनी वाढ होण्याची अपेक्षा आहे, तुलनेत याच कालावधीमध्ये हेच विकासाचे प्रमाण युएस व युकेमध्ये अनुक्रमे ५० टक्के व २४ टक्के असण्याची अपेक्षा आहे.

पत्रकार श्रीमती. फये डिसूझा यांच्याद्वारे नेतृत्वित लाँच कार्यक्रमाचा भाग असलेल्या पॅनेल चर्चेदरम्यान बोलताना एडेलगिव्ह फाऊंडेशनच्या कार्यकारी अध्यक्ष विद्या शाह म्हणाल्या, "भारतातील महिला सांस्कृतिक क्रांतीमध्ये, त्यांच्या व्यवसाय निर्मितीमध्ये आणि भावी महत्त्वाकांक्षी महिला उद्योजकांसाठी मार्ग शोधून काढण्यामध्ये अग्रस्थानी आहेत. त्यांच्या भूमिका देशाचा आर्थिक विकास, रोजगार निर्मिती व औद्योगिकीकरण वाढवण्यामध्ये महत्त्वाच्या आहेत. योग्य प्रशिक्षण, इन्सेटिवायझेशन, आर्थिक व सांस्कृतिक मान्यता देणाऱ्या धोरणांचा अवलंब व योजनांची अंमलबजावणी भारतातील महिला उद्योजकांच्या यशासाठी महत्त्वाचे आहे हे संशोधन आमच्या उद्यम स्त्री कॅम्पेनचा पाया आहे. या कॅम्पेनचा सहयोग व पोहोच माध्यमातून भारतातील महिला उद्योजकांसाठी समान व सक्षम वातावरण निर्माण करण्याचा मनसुबा आहे.

एडेलगिव्ह फाऊंडेशनच्या मुख्य कार्यकारी अधिकारी नग्मा मुल्ला पॅनेल चर्चेदरम्यान म्हणाल्या, महिलांना आर्थिकदृष्ट्या सक्षम करणे हे पूर्णतः विकासावर अवलंबून आहे. महिलांमध्ये स्वावलंबीपणा व आत्मविश्वास निर्माण करण्यापासून महिला जगत असलेल्या जीवनाचा दर्जा वाढवण्यापर्यंत उद्योजकता त्यांच्या सक्षमीकरणाला चालना देते. तसेच उद्योजकता त्यांना स्वतःसाठी, तसेच त्यांच्या मुलांसाठी दर्जेदार शिक्षण व उत्तम आरोग्यासंदर्भात योग्य निर्णय घेण्यामध्ये स्वायत्तता व निर्णय घेण्याचा अधिकार देते. आमचा विश्वास आहे की उद्यम स्त्री उपक्रम सामाजिक प्रगती व कल्याणासाठी उत्प्रेरक ठरू शकतो.

प्रमुख निष्पत्तीच्या आधारावर संशोधन शिफारस करते की राज्यांनी त्यांच्या विशिष्ट गरजा ओळखण्यासाठी मेटा-अॅनालिसिस करावे, संबंधित प्रोग्राम्स डिझाइन करून त्यांची अंमलबावणी करावी, टॅक्स इन्सेटिव्हजसह समान ब्रॅण्डअंतर्गत महिला उद्योजकांकडील उत्पादनांना चालना द्यावी, अकाऊंटिंग, एचआर मॅनेजमेण्ट व कम्युनिकेशन ही कौशल्ये आत्मसात करणारे सॉफ्ट-स्किल्स प्रशिक्षण राबवावे, नैतिक पाठिंब्यासाठी जागरूकता कार्यक्रम व समुदाय एकत्रीकरण उपक्रम राबवावे आणि उदयोन्मुख उद्योजकांना त्यांच्या उद्योगांना आकार देण्यासोबत विस्तारित करण्यामध्ये सक्षम करण्यासाठी स्थानिक पातळ्यांवर मेन्टोरशीप उपक्रम राबवावेत.

महिलाओं में उद्यमशीलता की भावना को बढ़ावा देना एडेलगिव फाउंडेशन के उदयम स्त्री अभियान का हिस्सा

रांची/वरिष्ठ संवाददाता ।

भारत की अग्रणी परोपकारी संस्था एडेलगिव फाउंडेशन ने शुक्रवार को महिला उद्यमशीलता के परिदृश्य को लेकर अपनी रिपोर्ट जारी की। यह एक समग्रतापूर्ण और राष्ट्रव्यापी अध्ययन है जिसमें महिला उद्यमियों के द्वारा सामना की जाने वाली चुनौतियों, स्वास्थ्य पर प्रभाव, सामाजिक-आर्थिक सुरक्षा और परिवार की देखरेख के नतीजे जैसे अहम मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया गया है। झारखंड सहित 13 राज्यों में किए गए अध्ययन से पता चला है कि अर्द्ध-शहरी और ग्रामीण भारत की लगभग 80% महिलाएं उद्यम शुरू करने के बाद अपनी सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक स्थिति में महत्वपूर्ण सुधार महसूस करती हैं। सर्वेक्षण में शामिल महिलाओं ने कहा कि इससे उनके भीतर स्वतंत्रता और आत्मविश्वास की भावना का संचार हुआ।

यह अध्ययन एडेलगिव फाउंडेशन के उदयम स्त्री अभियान का हिस्सा है, जिसका उद्देश्य महिलाओं में उद्यमशीलता की भावना को बढ़ावा देना और भारत में महिला आर्थिक सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए प्रमुख मार्गों में से एक के रूप में महिला उद्यमशीलता को प्रोत्साहित करना है। एक ऑनलाइन कार्यक्रम के दौरान इस रिपोर्ट को महिला और बाल विकास मंत्रालय के सचिव राम मोहन मिश्रा ने जारी किया, जिसकी अध्यक्षता नीति आयोग के सीईओ अमिताभ कांत ने की। महिला उद्यमशीलता को बढ़ावा देने के लिए मौजूद कई सरकारी योजनाओं और नीतियों की मौजूदगी के बावजूद महिला उद्यमियों के द्वारा इन योजनाओं का लाभ लेने के मामले में संख्या काफी कम है। सर्वे में शामिल महिला उद्यमियों में से केवल 1% ने सरकारी योजनाओं का लाभ लिया और ऐसा इसलिए क्योंकि मात्र 11% महिलाओं को ऐसी योजनाओं के बारे में जानकारी थी। अध्ययन के मुताबिक भारत में महिलाओं के मालिकाना हक वाले कारोबारों के पांच वर्षों में 90% तक बढ़ने का अनुमान है, जबकि अमेरिका और ब्रिटेन में यह क्रमशः 50% और 24% फीसदी है।

एडेलगिव फाउंडेशन की एक्जिक्यूटिव चेयरपर्सन विद्या शाह ने कहा कि, ''भारत में महिलाएं सांस्कृतिक क्रांति की अगुवाई कर रही हैं। वह अपने कारोबारों का निर्माण कर रही हैं और भविष्य के लिए उद्यमी महिलाओं के लिए रास्ता तैयार कर रही हैं। अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाने, रोजगार सृजन और औद्योगीकरण में उनकी भूमिका अहम है।''

एडेलगिव फाउंडेशन की सीईओ नगमा मुल्ला ने कहा कि, उदयम स्त्री सामाजिक उन्नति और उनकी भलाई के मामले में अहम साबित हो सकता है।

अध्ययन में इस बात की सिफारिश की गई है कि राज्य अपनी विशिष्ट आवश्यकताओं की पहचान करने और प्रासंगिक कार्यक्रमों को लागू करने, कर छूट के साथ एक ब्रांड के तहत महिला उद्यमियों के उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए अध्ययन कराएं। इसके साथ ही अकाउंटिंग, एचआर प्रबंधन और कम्युनिकेशन, नैतिक समर्थन के लिए पीढ़ी को जागरूक करना और सामुदायिकता को बढ़ावा देने और नवोदित उद्यमियों को अपने उद्यम को औपचारिक रूप देने और विस्तार करने में सक्षम बनाने के लिए लिए स्थानीय स्तर पर मेंटरशिप कार्यक्रम चलाए जाने का जिक्र किया गया है।

एडेलगिव्ह फाऊंडेशनने नुकतेच सादर केलेल्या अहवालाच्या मते

पुढील ५ वर्षांमध्ये भारतातील महिला उद्योजक संचालित व्यवसायांमध्ये जवळपास ९० टक्क्यांनी वाढ होण्याची अपेक्षा

प्रतिष्ठित परोपकारी संस्था एडेलगिव्ह फाऊंडेशनने शुक्रवारी त्यांचा 'लँडस्केप स्टडी ऑन वुमेन ऑन्त्रेप्रीन्युअरशीप' अहवाल सादर केला. हे व्यापक राष्ट्रीय संशोधन महिला उद्योजकांची आव्हाने, त्यांच्या आरोग्य, सामाजिक-आर्थिक सुरक्षितता व कौटुंबिक कल्याण निष्पत्तींवरील परिणामावर लक्ष केंद्रित करते आणि महिला उद्योजक व त्या कार्यरत असलेल्या इकोयंत्रणेचे परिपूर्ण अवलोकन देते. १३ राज्यांमध्ये करण्यात आलेल्या या संशोधनामधून निदर्शनास आले आहे की अर्ध-शहरी व ग्रामीण भारतातील जवळपास ८० टक्के महिलांनी उद्योजक म्हणून सुरूवात केल्यानंतर त्यांच्या सामाजिक-आर्थिक व सांस्कृतिक दर्जामध्ये लक्षणीय सुधारणा झाली आहे. सर्वेक्षण करण्यात आलेल्या महिलांनी स्वावलंबीपणा व आत्मविश्वासाचा देखील उल्लेख केला. हे संशोधन फाऊंडेशनच्या उद्यमस्त्री कॅम्पेनचा भाग आहे. या कॅम्पेनचा महिलांमधील उद्योजकता उत्साहाला चालना देण्याचा आणि भारतातील महिलांच्या आर्थिक सक्षमीकरणाला चालना देण्यासाठी प्रमुख मार्ग म्हणून महिला उद्योजकला प्राधान्य देण्याचा मनसुबा आहे. महिला व बाल विकास मंत्रालयाचे सचिव श्री. राम मोहन मिश्रा यांच्या हस्ते ऑनलाइन कार्यक्रमाच्या माध्यमातून हा अहवाल सादर करण्यात आला. निती आयोगाचे मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री. अमिताभ कांत यांनी या कार्यक्रमाचे अध्यक्षस्थान भूषवले.

बहुआयामी संशोधनाने महिला उद्योजकांच्या प्रवासाबाबत जाणून घेण्यासाठी सामाजिक, आर्थिक, वैयक्तिक ते कौटुंबिक अशा विविध घटकांवर लक्ष केंद्रित केले आहे आणि इकोयंत्रणेमधील सरकार, एनजीओ व कॉर्पोरेट्सच्या भूमिकांकडे देखील पाहिले आहे. संशोधनामधून असे निदर्शनास येते की उद्योजकतेमुळे महिलांसाठी सामाजिक-सांस्कृतिक पैलूंमध्ये सुधारणा झालेली दिसण्यात आली असली तरीही महिला उद्योजकांसाठी उपलब्ध आर्थिक माहिती व संसाधनांमध्ये लक्षणीय पोकळी आहे आणि त्यांना विपणन, उत्पादन, तंत्रज्ञान व सामाजिक-सांस्कृतिक आव्हानांचा सामना करावा लागत आहे. महिला उद्योजकतेला पाठिंबा देण्याचा अनेक सरकारी योजना व धोरणे असली तरी महिला उद्योजकांकडून अशा योजनांचा अवलंब होण्याचे प्रमाण खूपच कमी आहे. सर्वेक्षण करण्यात आलेल्या महिला उद्योजकांपैकी फक्त १ टक्के महिलांनी सरकारी योजनेचा लाभ घेतला आहे आणि यामागील प्रमुख कारण म्हणजे फक्त जवळपास ११ टक्के महिलांना कोणत्याही योजनांबाबत माहिती आहे. आर्थिक सहाय्यबाबत जागरूकतेचा अभाव, आवश्यक कागदपत्रे उपलब्ध नसणे, या योजनांचा वापर करण्याची प्रक्रिया 'जटिल' असण्याचा समज आणि गहाण ठेवण्यासाठी कोणतीही मालमत्ता नसणे ही यामागील काही कारणे होती. संशोधनाचा अंदाज आहे की पुढील ५ वर्षांमध्ये भारतातील महिला उद्योजक संचालित व्यवसायांमध्ये जवळपास ९० टक्क्यांनी वाढ होण्याची अपेक्षा आहे, तुलनेत याच कालावधीमध्ये हेच विकासाचे प्रमाण युएस व युकेमध्ये अनुक्रमे ५० टक्के व २४ टक्के असण्याची अपेक्षा आहे.

पत्रकार श्रीमती. फये डिसूझा यांच्याद्वारे नेतृत्वित लॉंच कार्यक्रमाचा भाग असलेल्या पॅनेल चर्चेदरम्यान बोलताना एडेलगिव्ह फाऊंडेशनच्या कार्यकारी अध्यक्ष विद्या शाह म्हणाल्या, "भारतातील महिला सांस्कृतिक क्रांतीमध्ये, त्यांच्या व्यवसाय निर्मितीमध्ये आणि भावी महत्त्वाकांक्षी महिला उद्योजकांसाठी मार्ग शोधून काढण्यामध्ये अग्रस्थानी आहेत. त्यांच्या भूमिका देशाचा आर्थिक विकास, रोजगार निर्मिती व औद्योगिकीकरण वाढवण्यामध्ये महत्त्वाच्या आहेत. योग्य प्रशिक्षण, इन्सेटिवायझेशन, आर्थिक व सांस्कृतिक मान्यता देणा-या धोरणांचा अवलंब व योजनांची अंमलबजावणी भारतातील महिला उद्योजकांच्या यशासाठी महत्त्वाचे आहे हे संशोधन आमच्या उद्यम स्त्री कॅम्पेनचा पाया आहे. या कॅम्पेनचा सहयोग व पोहोच माध्यमातून भारतातील महिला उद्योजकांसाठी समान व सक्षम वातावरण निर्माण करण्याचा मनसुबा आहे."

एडेलगिव्ह फाऊंडेशनच्या मुख्य कार्यकारी अधिकारी नग्मा मुल्ला पॅनेल चर्चेदरम्यान म्हणाल्या, "महिलांना आर्थिकदृष्ट्या सक्षम करणे हे पूर्णतः विकासावर अवलंबून आहे. महिलांमध्ये स्वालंबीपणा व आत्मविश्वास निर्माण करण्यापासून महिला जगत असलेल्या जीवनाचा दर्जा वाढवण्यापर्यंत उद्योजकता त्यांच्या सक्षमीकरणाला चालना देते. तसेच उद्योजकता त्यांना स्वतःसाठी, तसेच त्यांच्या मुलांसाठी दर्जेदार शिक्षण व उत्तम आरोग्यासंदर्भात योग्य निर्णय घेण्यामध्ये स्वायत्तता व निर्णय घेण्याचा अधिकार देते. आमचा विश्वास

आहे की उद्यम स्त्री उपक्रम सामाजिक प्रगती व कल्याणासाठी उत्प्रेरक ठरू शकतो."

प्रमुख निष्पत्तींच्या आधारावर संशोधन शिफारस करते की राज्यांनी त्यांच्या विशिष्ट गरजा ओळखण्यासाठी मेटा-ॲनालिसिस करावे, संबंधित प्रोग्राम्स डिझाइन करून त्यांची अंमलबावणी करावी, टॅक्स इन्सेटिव्ह्जसह समान ब्रँण्डअंतर्गत महिला उद्योजकांकडील उत्पादनांना चालना द्यावी, अकाऊंटिंग, एचआर मॅनेजमेण्ट व कम्युनिकेशन ही कौशल्ये आत्मसात करणारे सॉफ्ट-स्किल्स प्रशिक्षण राबवावे, नैतिक पाठिंब्यासाठी जागरूकता कार्यक्रम व समुदाय एकत्रीकरण उपक्रम राबवावे आणि उदयोन्मुख उद्योजकांना त्यांच्या उद्योगांना आकार देण्यासोबत विस्तारित करण्यामध्ये सक्षम करण्यासाठी स्थानिक पातळ्यांवर मेन्टोरशीप उपक्रम राबवावेत.